अवान्तर
प्रो॰ मायानन्द मिश्र

अवान्तर

श्री मायानन्द मिश्र.

प्रकाशक :
**मैथिली चेतना परिषद,
सहरसा**

प्रथम संस्करण : १९८८ ई०

मूल्य :
साधारण : १०=००
सजिल्द : १५=०० 25/-

मुद्रक :
धर्मयुग प्रेस न्यू
कदमकुआँ, पटना-३

भूमिका

आधुनिक मैथिलीक इतिहास केर समकालीन काव्य कुंठित ओ व्यथित मानवीय-सम्वेदना तथा संघर्षशील युग-चेतनाक बौद्धिक एवं वर्गीय काव्य थिक. जे मिश्रित प्रतिक्रियाक बीच अपन यात्राक तीस बर्ष पूर्ण करैत प्रायः अंतिम साँस ल' रहल अछि ।[1]

अंतिम साँस ल' रहल अछि एहि लेल जे ई काव्य-शिल्प अपन नवीन आकर्षण समाप्त क' स्वयं रूढ़ भ' गेल अछि तथा एकर आयु-सीमा सेहो समाप्त-प्राय अछि । मैथिली काव्य-जगतमे ई नवीन काव्य-स्वर 1958 ई० मे स्वरगंधाक रूपमे जन्म लेलक, 1960 ई० क 'अभिव्यन्जना'-प्रकाशन सँ एकटा काव्यान्दोलनक रूप मे ठाढ़ भेल तथा 1970 ई०मे किसुनजी द्वारा सम्पादित 'मैथिलीक नव कविता' सँ अवस्थित-व्यवस्थित भ' गेल । सन् 58 सँ सन् 88 ई०क मध्य एहि नवीन काव्यान्दोलनकेँ विकासक लेल अनेक पत्र-पत्रिका भेटल, अनेक हस्ताक्षरक उद्‌भव भेल तथा अनेक संकलनक उपलब्धि भेल ।

दिशांतरक भूमिका मे—जे पुस्तकाकार तँ सन् 1965 ई० मे भेल, किन्तु जकर कविता प्रायः सन् 59/60 ई० मे लिखा गेल छल—जखन आलोचनाक सुविधाक लेल नवीन काव्यक नामकरणक प्रश्न समक्ष आयल छल तँ 'अभिव्यन्जना'-वादक रूपमे तकर निराकरण कयने छलहुँ—एहि लेल जे एहि प्रकारक काव्यक अभिव्यन्जना-प्रणाली सर्वथा नवीने नञि, आकस्मिको छल, आकर्षको छल । सङहि 'अभिव्यन्जना' नामक पत्रिका सर्वप्रथम एहि प्रकारक काव्य केँ एकटा आन्दोलनक रूपमे ठाढ़ करबाक चेष्टा कयने छल ।

तकर बाद अनेक नाम (वाद) केर प्रस्ताव आयल जाहि मे अधिकांश (प्रयोगवादे जकाँ) खड़ी-बोलीक हास्यास्पद अनुकरणमूलक छल तथा किछु तर्कहीन । पूर्वं कहल, नामकरणक प्रयोजन समीक्षक लेल होइछ, पाठक लेल नञि, स्वयं कवि लेल सेहो नञि । उपयुक्त नामकरण एखनहुँ कयल जा सकैछ जे अनुकरणमूलक नञि हो, तर्कसंगत हो तथा काव्य-प्रकृतिकेँ

1. एकर विस्तृत विवेचन हम 'आधुनिक मैथिली-काव्यक भूमिका' नामक कृतिमे कयल अछि ।

अधिकाधिक रेखांकित कर'बला हो । आ तेँ एहि प्रकारक काव्यकेँ तत्काल हम अभिव्यञ्जनावादी काव्य सँह कहब ।

अभिव्यञ्जनावादी काव्य अपन उपलब्धि मे बहुत अधिक निराश नञि अछि । ई बात हम नवीन काव्यक नाम पर जे किछु अनर्गल प्रलाप लीखल गेल अछि अथवा काव्यक नाम पर जे भ्रष्ट गद्य लीखल गेल अछि तकरा ध्यानमे रखैत लीखि रहल छी । जखन कोनो बाढ़ि अबैत अछि तँ बहुत रास अवांछितो प्रवाहित होइते अछि, से स्वाभाविके अछि । ओकर कटु आलोचनो स्वाभाविके ।

कटु आलोचना अधिक भेल प्रेषणीयताक प्रश्न पर । प्रेषणीयताक अभाव भेल किछु अपरिचित भाव-बोधक कारणे तथा किछु-किछु अप्रचलित प्रतीक ओ बिम्ब-योजनाक कारणे सेहो । किछु समर्थो कवि प्रेषणीयताक प्रश्न पर उदासीन रहलाह अछि ।

किन्तु एहि तीस वर्षमे अभिव्यञ्जनावादी काव्य निश्चित रूपेँ एकटा नवीन क्षितिजक उद्घाटन केलक अछि, ओहि क्षितिजकेँ अपन युग-चेतनाक भाव-रंगसँ रेखांकित केलक अछि, रेखांकनक लेल सर्वथा नवीन शिल्प-बोध तकलक अछि तथा एकटा निश्चित अभिव्यञ्जना-प्रणालीक विकास केलक अछि । वस्तुत: अभिव्यञ्जन-शैली एहि काव्यान्दोलनक अन्यतम उपलब्धि थिक । युग-चेतनाक अभिव्यक्ति तँ न्यूनाधिक सब युगक सब साहित्य मे होइतहि अछि । एकरा बिना तँ साहित्य, साहित्ये नञि भ' सकैछ ।

एतबा निर्विवाद जे श्रेष्ठ साहित्य शाश्वत-मूल्य-बोध ओ समकालीन युग-बोधक संतुलित समन्वयन थिक । समकालीन युग-बोध साहित्यक शरीर थिक आ शाश्वत मूल्य-बोध ओकर आत्मा । विकासशील शरीरकेँ आत्मे गरिमा प्रदान करैत रहैत अछि । शरीरक प्राप्ति होइछ वर्तमान सँ तथा आत्माक अतीत सँ, परम्परा सँ । शरीर नवीन सौन्दर्यक आकर्षण दैत अछि तथा आत्मा दैत अछि चिरंतनता । एहने साहित्य श्रेष्ठ साहित्य बनैत अछि । कालजयी होइत अछि ।

कहबाक प्रयोजन नञि जे अभिव्यञ्जनावादी काव्यक जन्म आङनक सोइरीगृहमे नञि, अपितु हॉस्पिटलक बरंडा पर भेल छल । आ तेँ ई काव्य भाव-बोध मे, शिल्प-विन्यास मे तथा कथन-भंगिमा मे अपन परम्परा सँ कटैत चल गेल, मैथिल-मन सँ हँटैत चल गेल । पाछू तँ काव्य रचना 'खेल' भ' गेल ।

आ काव्य अपन धर्म सँ च्युत भ' गेल । निश्चित रूपेँ काव्य एकटा विधा थिक जकर अपन शासन अछि; अपन अनुशासन अछि । ई तथ्य उपेक्षित होम' लागल ।

एकर खेद आचार्य रमानाथ बाबूकेँ सेहो भेल छलनि—'खेदक विषय थिक जे आधुनिकताक तरंगमे कतोक कवि (?) एहि दिशि ध्यान नहि दए तेहन कविता (?) लिखैत छथि जकरा मुक्तवृत्त सेहो नहि कहि सकैत छी, ओ 'वृत्त' थिके नहि ।···· श्री उमानाथ बाबूक उक्ति सर्वथा समीचीन जँचैत अछि जे कविता तँ ओ थिके नहि; ओकरा नीक गद्यो नहि कहि सकैत छी'—(नवीन गीतक भूमिका पृ० 16) ।

एहि प्रकारेँ कालांतरक अभिव्यञ्जनावादी काव्य अपन युग-चेतनाक अभिव्यक्ति सँ भाव-बोध तथा नवीन प्रयोग सँ शिल्प-बोधक क्षेत्रमे सामान्यत: उपलब्धि त' प्राप्त क' सकल, किन्तु काव्य-धर्म सँ निरंतर च्युत होइत चलि गेल आ' अंत मे रूढ़ भ' गेल । ई एक प्रकारक गतिरोध थिक ।

गतिरोध हँटि सकैत अछि काव्यमे पुन: राग-तत्व ओ लय-तत्वक पुनर्स्थापन एवं पुर्नप्रतिष्ठापन सँ । तखने साम्प्रतिक मैथिली-काव्य अपन नवीन स्वरूप-स्पन्दन सँ प्राणवन्त भ' पुन: समाज मे प्रवेश क' सकत । प्रवेशक लेल काव्यकेँ पुन: स्व-काव्य-धर्म ओ स्व-काव्य-रूप ग्रहण कर' पड़त । काव्यक धर्म थिक राग-तत्व आ रूप थिक लय-तत्व । स्मरणीय जे काव्य एहि दुनू—राग तत्व ओ लय-तत्व—क अभावमे ने कोनो प्रभावे उत्पन्न क' सकैछ आ ने स्वभाव सँ जीविते रहि सकैछ । काव्य कालजयी बनैत अछि अपन शाश्वत मूल्य-बोध तथा समकालीन युग-बोधसँ । शाश्वतता भेटैत अछि परम्परा सँ आ युग-चेतना भेटैत अछि समकालीन समाज सँ ।

आजुक विश्व-मन संत्रस्त अछि; ओकरा चाही शांति ओ सह-अस्तित्वक धारणा । भारत-मन क्षुब्ध अछि । ओकरा चाही भावनात्मक एकता ओ राष्ट्रीय अखंडता । मैथिल-मन कुंठित अछि; ओकरा चाही अपन अस्तित्व ओ सांस्कृतिक परिचय-स्मृति । ई देत इतिहास । इतिहास स्वयं चौबटिया पर ठाढ़ किंकर्तव्यविमूढ़ अछि । भौतिकता मे व्यस्त अछि आ विज्ञान सँ त्रस्त अछि । युग-दौड़ सँ कुंठित अछि ।

इतिहासकेँ गढ़ैत अछि संस्कृति । संस्कृतिक महत्वपूर्ण उपकरण थिक काव्य । काव्यक महत्वपूर्ण धर्म थिक 'राग', धर्म थिक 'लय', अंतोगत्वा रूप ।

आ तेँ ई 'अवान्तर'।

अवान्तरक आरम्भ अछि गीतल सँ।

'गीतं लातीति गीतलम्' अर्थात् गीत केँ आन'बला भेल गीतल। किन्तु 'गीतल' परम्परागत गीत नहि थिक, एहिमे एकटा 'सुर' गजल केर सेहो लगैत अछि। 'गीतल' गजल केर सब बंधन (सर्त) केँ स्वीकार नहि करैत अछि। कइयो नहि सकैत अछि। भाषाक अपन-अपन विशेषता होइत अछि जे ओकर संस्कृतिक अनुरूपे निर्मित होइत अछि। हमर उद्देश्य अछि मिश्रण सँ एकटा नवीन प्रयोग। तेँ गीतल ने गीते थिक, ने गजले थिक; गीतो थिक आ गजलो थिक। किन्तु गीतितत्वक प्रधानता अभीष्ट, तेँ गीतल।

गजल उर्दूक अपन 'राहड़ि-आमिल', शेर सभक अलग-अलग 'मिजाज', मुदा एक्के 'दस्तरखान' पर अनेक 'जख्मी', अनेक 'कातिल', अनेक 'खंजर' केर जमघट। एहि जमघट सँ फैज अहमद फैज अलग हटि गेलाह। एकटा नवीन घाट-बाटकेँ एकटा नवीन 'मुकाम' देलनि, नवीन 'मंजिल' तकलनि। गजल झरोखाक बुर्का छोड़ि, सड़क पर आबि गेल, सड़क केर उदास आँखि देख' लागल। गलीक आक्रोश ओकरा सम्वेदनशील बना देलक।

एहने सम्वेदनशीलता अवान्तरक किछु गीतल मे भेटत। 'अवान्तर'क गीतल, सभा-समारोहक सान्ध्य-मौजक अनुकूल भने नहि हो, किन्तु समकालीन युग-चेतनाक प्रति विमुख नहि अछि।

किछु मे उच्चारण-असंतुलनो, जे वाध्यता।

कहियो 'दिशान्तर'क परिशिष्ट मे गीत देने छलहुँ, आइ 'अवान्तर'क परिशिष्ट मे कविता। ई एहि लेल जे दिशान्तर-काल मे धारणा छल जे हम दोसर कविता-संग्रह नहि प्रकाशित करब।

'अवान्तर' अपनेक शुभकामना चाहैत अछि।

—मायानन्द मिश्र

गीतल

एक

नगर मे घोल भेलै, काल्हि ओ बयान देतै
कहैछ लोक सब, बताह छै, चलान हेतै।

कतेक छोट देह मे कतेक आँखि भेलै
कहैछ गाछ तरक लोक कें मकान देतै।

कतेक हाथ ओकर हाथ लेल उठइत छै
नगर के बौक सभक हाथ मे कृपाण देतै।

बिहाड़ि संग मे चलैत छै ओकर सदिखन
देबाल तोड़ि देबा लेल ओ परान देतै।

जकर चरण अकाश मे उड़ैत छै सदिखन
उड़ैक भेद सभक खोलि कें प्रमाण देतै।

डुबल छलै अन्हार मे जते, जते सहमल
सभक अकाश हेतै सऽब लेल चान हेतै।

दुइ

उठल बसात, उठत आर, जोर सँ बहतै
बढ़ल ई हाथ, बढ़त आर, आ कते बढ़तै।
उठल जे हाथ, एखन से बन्हा रहल मुट्ठी
देबाल बीच मे जे छैक से तुरत खसतै।
किताब बन्द अछि इजोत केर, अन्हारे मे
हिसाब आब हेतै, से हिसाब सँ चलतै।
उदास साँझ के भाषा कतेक बदलल छै
उगत जे आब भोर, सैह दिन अपन गढ़तै।
कतेक जीबि गेल, जीबि गेल धोखा सँ
भुगोल आब ने इतिहास केँ कतहु ठकतै।
कतेक अंत, अंत मे अबैछ, नियमे छै
कतेक अंत एखन, बीच केर, कते डरतै।

●

तीन

कतेक ठोर मे कतेक बात अटकल अछि
नगर भरिक बसात आब बहुत बदलल अछि।
बसात जे छलैक से बिहाड़ि बनि गेलै
गड़ल जतेक छलै, से ततेक उखड़ल अछि।
इ हाथ छीनि लेत ओ हँसी जे छल छीनल
गलीक बात सँ सड़क कतेक सहमल अछि।
बनल मचान कते ऊँच, कते डीह कटल
उकर अकाश छिनल गेल, सैह भड़कल अछि।
जे जीबि गेल, जीबि गेल जीवनक हाथेँ
कनेक गीत लेल बाट-घाट भटकल अछि।
घबाह पैर सभक छै, घबाह मोनो छै
सुतल भूगोल छलै, आब एखन धधकल अछि।

●

चारि

कहब ने फूसि एखन बात, बात भड़कल अछि
बिहाड़ि उठि गेलैक, रुखि कतेक बदलल अछि।
बिहाड़ि छीनि लेत जे एकर छलै हिस्सा
गलीक आँखि एक भेल, आँखि धधकल अछि।
उगत, जतेक आइ धरि एतय रहल डूबल
पहाड़ केर एखन साँस जेना अटकल अछि।
चलत जुलूस आब नञि अन्हार केर कहियो
इजोत देखि कें, अन्हार आइ सहमल अछि।
कतेक अरिपनक पिठार धरि रहल भूखल
कतेक मेहदीक रंग, मूक भटकल अछि।
चलैत बाट सँ छिनल ने गेल बाट कतहु,
जुलूस आगि के थिक, आगि एखन दहकल अछि।

पाँच

कतेक राति सँ, कतेक मन उपासल अछि
कतेक चार, कते गाम केर उछाहल अछि।
बिसरि गेलै हँसी करब दलान, आङन सँ,
कते सबेर सँ खरिहान जे उसारल अछि।
उकनि गेलैक मेहदीक गीत आङन सँ
जे गीत जाँत के छल, जाँत मे पिसायल अछि।
दिनुक दलान पर नियार छल जे साँझ रङब
झड़ल पुआर जकाँ साँझ सब उदासल अछि।
पियास सँ भरल कतेक अरिपनक आङन
कतेक राति के आँचर कते सिहायल अछि।
हँसीक दोग मे नोरक कते खजाना अछि
एतेक पानि अछि मुदा कते पियासल अछि।

छऽ

सुनैत छी, कपार ऐ नगर के दकचल अछि
बहैत अछि बसात, से बसात उनटल अछि ।

बिचार छल जतेक ठोर अछि हँसी रोपब
हमर इ हाथ पाँच बर्ष लेल कपचल अछि ।

जतेक आँखि भेटल, आँखि मे अन्हारे छल
नगर भरिक इजोत एकठाम अटकल अछि ।

सड़क पकड़ि सकैछ पैर जँ एतय कहियो
बना सकैछ बाट, बाट एखन भटकल अछि ।

बहैत अछि बसात, किन्तु बन्द अछि खिड़की
अकाश ऐ नगर के आनठाम लसकल अछि ।

फराक कंठ अछि, फराक सभक अछि माथो
सिखा सकैछ बात, बात जते बहसल अछि ।

सात

सुनैत छी, नगर अहाँक बहुत सनकल अछि
कते बबूर मे, कतेक ऊँट लटकल अछि ।

सुनल नगर मे जंगलो बनैछ लोके केर
हँसीक रंग धरि सियाह सुनल, खटकल अछि ।

सुनैत छी इजोत देखि, लोक डरि जाइछ
अन्हार केर जुलूस मे कतेक चमकल अछि ।

दिने देखार सड़क छीनि लैत अछि हँसियो
सड़क के आँखि-कान, मोन जकाँ पचकल अछि ।

पुछैक अछि कतेक बात, पुछी ककरा सँ
नगर के बोल सब कहैछ, बहुत बहसल अछि ।

कतेक बात बात मे, कतेक कहलक अछि
गलीक मूँह पर एखन कतेक ठमकल अछि ।

आठ

सुनल, अहाँक गाम केर लोक हँसइत अछि
कतेक नीक बात थीक, लोक बजइत अछि।

हँसी भेटैत छै कहाँ, बजार अछि चढ़हल
हँसैत अछि केहन मुदा कतेक ठकइत अछि।

कतेक टूटि गेलै घर, कते उजड़ि रहलै
खबरि तँ रोज रोज लोक कते पढ़इत अछि।

हबकि रहल इजोत कें अन्हार अनचोखे
ई मील-पाथरो तकैत जेना कँपइत अछि।

ठकैत अछि जिबैत लोक एतय जीवनकें
दिनहि मे कैक बेर लोक एतय मरइत अछि।

सुखैल धार जकाँ पानि आँखि मे सूतल
उदास साँस सँ रातुक पहाड़ नपइत अछि।

नऽ

चलैत काल बेर-बेर आँखि फड़कल अछि
गलीक मूँह पर पहुँचि करेज धड़कल अछि।

कतेक राति के मन मे, कतेक राति बसल
कतेक राति मे ई राति कते छलकल अछि।

अहाँ केर एक बोल मोन केर गीत बनल
कतेक गीत मे अहाँक राग गमकल अछि।

अहाँक नाम पर कतेक गाम अछि बसइत
अहाँक नाम लैत लैत लोक सनकल अछि।

गुथिक सुगंधि सँ कतेक अपन साँझ रङ्गत
कतेक मोड़ पर कतेक मुँह चमकल अछि।

अभाव मे कतेक भाव केर, भाव बढ़य
जतेक देखि लेलक से ततेक भटकल अछि।

दस

शराब केर आब काज नञि एखन पड़तैं
चलैत बात जते काल धरि अहँक रहतैं।

करेज राति केर, अकानि कें धड़कि रहलै
कतेक बात अछि जे बात-बात मे उठतै।

कतेक आँखि मे अहाँक राज चलइत अछि
कतेक साँझ अहँक नाम पर एतय जमतै।

एखन तँ राति अछि आ राति केर बातो अछि
कतेक राति धरि, कतेक राति केर चलतै।

कतेक मूँह देखक लेल जेना बनइत अछि
जे चालि गाम के अछि, बात सब कते उड़तै।

कतेक मोन मे, कतेक मोन रहइत अछि
उतरि जेतैक साँझ कोन गलो, के कहतै ?

एगारह

कतेक बात एहन अछि, कहल ने जाइत अछि
कतेक राति कें ई राति बड़ दुखाइत अछि।

सुखैल धार जकाँ मोन मे पियास रहत
कते पियास ठोर पर जेना सिहाइत अछि।

कतेक हारि गेल अछि तकैत जीवन कें
कतेक जीवने सँ जीवनक सिकाइत अछि।

कतेक राति कें तकत राति, राति बितल
ओसार राति के असगर जेना डेराइत अछि।

बहैत अछि बसात ठूँठ जेना कबदाबय
कतेक मूँह अपन मूँह सन बुझाइत अछि।

जे बाट बीति गेल, बीति गेल बात कते
कतेक बात अंत सँ जेना पड़ाइत अछि।

बारह

तकैत मूँह कते, बेर-बेर अटकल अछि
पढ़ैत आँखि के भाषा, कतेक भटकल अछि।
बहुत के मोन मे छलैक, कोनो बात हेतै
केबार बन्द देखि कें कतेक खटकल अछि।
गली दने अन्हार मे चलब जे नञि सिखलक
ओकर इजोत एखन गाम-गाम भड़कल अछि।
पियास सँ भरल कतेक धार अछि बहलै
अकाश ठाढ़ भेल आब, आब ठनकल अछि।
उगैत काँट कें उठैत पैर नञि तकइछ
जरैत आगि के धधरा कतेक धधकल अछि।
कतेक जीबि गेल जीवनेक आशा मे
दिनक हिसाब भेल अछि, हिसाब फड़कल अछि।

तेरह

अहींक नाम मनक गाम लिखि पठाबै छी
जे जोड़ि गेल रही, जोड़ सँ घटाबै छी।
उठैत अछि कतेक पल, खसैत पल देखय
खसल जतेक भेटय, पाँज मे उठाबै छी।
कतेक साँझ के मन मे कतेक राति रहत
कतेक राति लेल साँझ कें लुटाबै छी।
कतेक पैंच चोट, छोट बनल रहि जाइछ
कतेक छोट बनल पैंच, से सठाबै छी।
देखल बहुत, बहुत सुनल, बहुत कमे दिन मे
कतेक बात कहब अछि, एखन लजाबै छी।
जे आगि थिक, रहत ओ, आगि जरइत अछि
जरैत अछि जते, करेज सँ सटाबै छी।

—

चौदह

बहुत कहैत अछि, गलीक ओ जमाना छल
जतेक आँखि छलै, आँखि लय खजाना छल।

बहुत कें मोन छै, चहल-पहल दोकान सभक
गलीक गीत छलै, गीत मे तराना छल।

खुजल रहै छलै जतेक जे झरोखा सब
देखैक लेल देखबाक ओ बहाना छल।

कतेक मोन सँ जीबैत छलै जीवन भरि
हँसी लुटैत छलै नञि तकर ठेकाना छल।

तकैत छल कतेक लोक, लोक छल तकइत
देखैक लेल नगर भरि जेना दिवाना छल।

पढ़ैत छल जे लोक आँखि आँखि केर भाषा
जतेक ठोर छलै, ठोर सभक गाना छल।

●

पन्द्रह

अन्हेर बात थीक, गीत एखन गाबै छी
नजरि पड़ैछ जेम्हर, आँखि चढ़ल पाबै छी।

जतेक मोड़ छल गलीक से अन्हारे छल
टुटैत साँझ सँ भोरक कथा बनाबै छी।

जिबैत देखि जीवनो हँसैछ जीवन पर
घटाव केर हिसाब मे एखन जोड़ाबै छी।

बहुत भेटैत अछि, बहुत-बहुत उताहुल सन
पजरि जे आगि रहल से कने जगाबै छी।

बसल कतेक गाम गीत केर उजड़ि गेलै
हँसीक दोग महक नोर कें बचाबै छी।

कतेक आँखि सँ सपना टुटैत खसि पड़लै
खसल जकर जतेक पल, तकर उठाबै छी।

●

सोलह

जे बात भेल छलै, बात एखन उनटल अछि
नजरि देखि गाम केर; कतेक खटकल अछि।

कतेक बाट-घाट मे रहैत अछि ठीके
केहन भेलैक बात, गाम आबि भटकल अछि।

देखैत छी जतेक बेर बन्द अछि खिड़की
भरोस कैर ठाढ़ि मे कतेक लटकल अछि।

सड़क तँ वैह अछि आ लोको अछि ओहिना
जतेक जे देखैत अछि, ततेक सहमल अछि।

कहक तँ बात बहुत अछि, मुदा कही ककरा
कतेक बन्द द्वार देखि-देखि अटकल अछि।

एतय जे जीवि रहल जीवनक बहाना थिक
कते नजरि मे कतेक प्रश्न चमकल अछि।

सत्रह

अहँ केर एक हँसी, सै हँसी फँसाबै अछि
अबैत साँझ देखि कें, कते डराबै अछि।

अहाँ ओझरैल सनक साँझ देखि, सोझराबी
कते सोझरैल सनक मोनकें ओझराबै अछि।

खसैत पल कतेक मे बिहाड़ि उठबै छै
पलहि मे एक युगक प्यास कें जगाबै अछि।

किदन सुनैत छी, केदन कहैत छल ककरो
ई रंग थीक जे दसलोक मे घिनाबै अछि।

तकैत छल पियास मोन सँ, पियासल कें
कतेक राति कें ऐ राति सँ ठकाबै अछि।

नजरि पड़ल जकर तकर करेज अछि धड़कल
अहाँक आँखि सँ कतेक मुँह रङाबै अछि।

अठारह

जखन सँ नाम सुनल अछि करेज धड़कल अछि
केबार बन्द छल मुदा कतेक हुलकल अछि।

बहल बसात अहँक नाम पर एतय कतबा
कतेक मूँह अहँक नाम लैत गमकल अछि।

बसात छल बहैत से बसात गुमसुम छल
कतेक ठोर पर, कते पियास अटकल अछि।

बिसरि जेबाक बात अछि अहाँक जग जाहिर
गलीक मूँह पर एखन कतेक ठमकल अछि।

सड़क तँ वैह छल, बजार छल, दोकानो छल
समान देखि देखि केँ कतेक खटकल अछि।

कतेक मोन मे, कतेक मोन गड़ि जाइछ
कतेक मोन नेने गाम-गाम भटकल अछि।

●

उन्नैस

बिसरि जे गेल, तकर मूँह मोन पाड़ै छी
दिनुक इजोत मे रातुक खड़ी उचारै छी।

कतेक यौवनक अपन रङल कथा होइछ
एतेक लोक मे, गीतक कथा उसारै छी।

हँसी भेटैत अछि कहाँ, हँसी कते मुसकिल
हँसीक रंग सँ अपन दरद ससारै छी।

कतेक नाम' कते ठोर लेल गीते थिक
कतेक गीत के दुनिञा एखन पसारै छी।

बिसरि सकैत छी, ऐ बात केँ बिसरि जायब
कतेक भोरकेँ ऐ राति धरि नमारै छी।

चिन्हार पात सब बिहाड़ि संग उड़िआयल
दिनुक जे ठूँठ बचल, ठूँठकेँ निहारै छी।

●

बीस

कतेक आँखि, कते आँखि से ठकाइत अछि
गड़ल कनेक, मुदा से कते दुखाइत अछि।

बहुत के मोन मे बहुत-बहुत जें बात छलै
बहुत के आँखिमे एखन बहुत सिकाइत अछि।

हँसी देख'क लेल लोकके' हँसऽ पड़इछ
कहैक लेल कते बात कहल जाइत अछि।

चिन्हार मूँह एखन अनचिन्हार भेल कते
अबैत देखि कते बाट सँ पड़ाइत अछि।

ओसार राति के ओहिना पड़ल रहत खाली
कतेक ठोर कते नाम पर सिहाइत अछि।

तकैत जीवनो रहल कतेक, जीवन भरि
जतेक शेष से विशेष बनि घिनाइत अछि।

एक्कैस

कोना ओ बात कही, बात सँ लजायल छी
जे संग-संग रहय, संग सँ ठकायल छी।

ठकैत जीवनो रहल कतेक जीवन के'
हँसीक दोग महक नोर सन नुकायल छी।

देख क बाद, नञि देख'क बड़ बहाना अछि
चलैत भीड़ मे एसगर जना हेरायल छी।

नगर लगैछ जेना अनचिन्हार जंगल हो
कतेक हाथ बिना मूँह सँ अघायल छी।

दिनुक देबाल पर कते हकार हम साटल
लहल दलान के ऐ साँझ सन मिझायल छी।

गिलास जेंह छुबी, सेंह भेटै अछि फूटल
बहूर सँ कतेक बाट मे घेरायल छी।

बाइस

सुनब ने बात कोनो आब, सब बहाना अछि
अहाँ लग, लोक कहय, बात के खजाना अछि।

बहैत अछि तेहन बसात, गर्म सबहक मन
रूसल जतेक मूँह, फेर सँ मनाना अछि।

अहँक हँसीक रंग सँ रङैछ सब, दिनकेँ
जतेक दरबाजा से आङनक दिवाना अछि।

कतेक बेर सँ ठकैत अहाँ आयल छी
बिलटि गेलैक बात पर कते धराना अछि।

सुना सकैत छी कतेक बात मूँहेँ पर
एखन तँ बात मुदा एकटा सुनाना अछि।

जतेक छोड़ि देने छी अहाँ अन्हार एतय
हरेक मूँह लेल हाथ केँ बनाना अछि।

तेइस

जुलुम केहन भेलैक से एखन सुनाबै छी
कतेक भेद सँ परदा एखन उठाबै छी।

कने बिहुँसि देलनि, नेहाल भेलहुँ गद्गद् सन
एखन तँ चोटकेँ करेज पर निजाबै छी।

झलक देखैक लेल बेर-बेर दौड़ल छी
देखैक बाद नजरि लोक सँ नुकाबै छी।

कते जी जान सँ, जो जान बचा रखने छल
दिने देखार लुटल अछि, कथा बुझाबै छी।

उड़ैत छल जतेक नाम के जते डंका
असल कही जँ कतहु तँ कहब उड़ाबै छी।

छुबैत छी जत' जते तते दरद करइछ
हँसीक रंग देखि केँ कते डराबै छी।

चौबीस

सुनू ओ बात कने काल्हिखन कमाल भेलै
दिने देखार सड़क बीच केहन हाल भेलै।

जे बात भेल छलै से कियो कोना बिसरत
उनटि गेलै बसात सँह तखन काल भेलै।

जतेक हाथ हुनक हाथ मे देलक कहियो
ओतेक हाथ तखन पाबि गाल लाल भेलै।

सभक नजरि देखि कें तुरत नजरि झुकलै
तखन तँ भीड़ केर मन जेना नेहाल भेलै।

सभक तँ मौन कखन सँ छलैक सनकल सन
बिहुँसि जे फेर देलनि, फेर इन्द्रजाल भेलै।

बिकैत अछि कतेक दिन, कतेक राति एतय
पटैक लेल कते नऽब हाल चाल भेलै।

पच्चीस

सुनैत छी, कहैछ सब, केहन जमाना अछि
जिबैत अछि जतेक जीवनक बहाना अछि।

पुछैछ हाल सब, बेहाल केर इच्छा सँ
बेहाल केर जे हाल, नहि तकर ठेकाना अछि।

हँसी बिकैत अछि, हँसी मुदा महग कतबा
हँसैत पर, हँसैत अछि, एहन दिबाना अछि।

कतेक पानियो सँ सस्त खून भेल गेलै
कतेक आँखि मे बमक जेना खजाना अछि।

कतेक लोक, लोक मे रहैछ, लोके सन
पड़ल जे असगरे लटल कते घराना अछि।

मरैत अछि से जीबि गेल, मरल जीवन सँ
अपन अपन जेबा सँ पूर्व सब भजाना अछि।

गीत

ज्योति-गीत

जगमग ज्योतिक वन्दन।
पूर्व क्षितिजमे स्वर्ण-शिखरसँ
किरणक निर्झर पावन।

ससरल दिशि-राधाक वदनसँ
तमकेर घन-अवगुंठन,
सृष्टिक मुरलीमे मुखरित अछि
नव चेतन अनुगुंजन।
ज्योति-विहग व्याकुल-मन-कलरव
तिमिरक कारा बन्धन,
फोलि कयल उन्मुक्त दिवाकर
खलखल गगनक आंगन।
जागल ताल, कमल-दल जागल
अलसायल पल सिहरन
धरणिक भाल भेल अछि जगमग
कर्मक लागल चानन।
गगनक पत्र, किरण केर मसि अछि
लीखल नव उद्बोधन,
विश्व-क्षितिज हित आइ हमर अछि
सह-अस्तित्वक चिंतन।
जय कर्मण्य, जागरण जय हे
जय-जय हे जाग्रत मन,
मंगल-कलश उठाओलि ऊषा
करबालय अभिनन्दन।
जगमग ज्योतिक वन्दन।

●